UGC Approved Journal
Research Link
Since March 2002
An International, Registered & Refereed Monthly Journal : Drawing
Research Link - 170, Vol - XVII (3), May - 2018, Page No. 88-89
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2015 - 2.782

राजस्थानी चित्रशैली में मेवाड़ की लघु चित्रण कला : एक अध्ययन

प्रस्तुत शोधपत्र राजस्थानी चित्रशैली में मेवाड़ की लघु चित्रण कला पर आधारित है। कला की कोई विधा हो, उस पर तत्कालीन समय, समाज, परिवेश, इतिहास का गहरा प्रभाव होता ही है। राजस्थानी चित्रशैली और उसकी कला सम्पदा समृद्ध रही है। इसमें समृद्धि का एक कारण मेवाड़ की लघु चित्रण कला भी है। वर्तमान दौर में सभी कुछ यद्यपि बदल चुका है, किन्तु जो कुछ भी हमारी सांस्कृतिक धरोहर है, उसे संरक्षण, उसकी सुरक्षा और उसकी लोकप्रियता को बनाये रखने की आवश्यकता है। बाजार सभी कुछ को निगल रहा है, चित्रकला चाहे किसी भी शैली या अंचल या प्रदेश की हो, उसका अस्तित्व खतरे में है। इसलिए, जो कुछ भी बचा है, उसे बाजार और चमक-दमक से बचाये रखने की आवश्यकता है। यह संभव हो सकता है, यदि शिक्षा और उच्च शिक्षा से इसे जोड़ दिया जाए।

डॉ.(श्रीमती) वीणा चौबे

भारतीय चित्र परम्परा में राजस्थान की चित्रकला के इतिहास को एक स्वर्णिम इतिहास के रूप में जाना जाता रहा है। राजस्थान की कला में भारत की चित्र परम्परा में राग–रागिनी चित्रण से एक व्यवस्थित और सौन्दर्यपूर्ण कलामय इतिहास सौंपा है, जिसकी चमक विश्वभर में दिखाई देती है और भारत की कला को सौन्दर्य पूर्ण कला वैभव के ऊँचे मंच पर विराजित करती है। राजस्थानी चित्र परम्परा में मध्यकालीन लघुचित्रण में मेवाड़ की लघु चित्रण परम्परा को वहाँ के चित्रकारों ने राग–रागनियों के रूप में शास्त्र और लोक नियमों के आधार पर बड़ी ही एकाग्रता एवं भावुकता से लघुचित्र परम्परा का निर्वहन करते हुए चित्रित किया है और सैद्धांतिक तर्कों को रेखा व रंगों के द्वारा दृश्य रूप में सृजित कर संसार को अचम्भित कर दिया है।

मानव जीवन में जितनी भी कलाएँ हैं, वे सभी सृजनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम हैं। कला का मूल सौन्दर्य भाव, रस है, इसका उत्कृष्ट उदाहरण राजस्थान के मेवाड़ की लघु चित्र परम्परा है, जो चित्रकला की अद्‌भुत मिसाल है। यहाँ के चित्रकारों ने बड़े ही मनोयोग से रेखाओं में रस के समावेश के साथ रूपाकारों को रूपांकित किया है। मेवाड़ की चित्रकला काफी लम्बे समय से ही लोगों का ध्यान आकर्षित करती रही है। यहाँ चित्रांकन की अपनी एक विशिष्ट परंपरा है, जिसे यहाँ के चित्रकार पीढ़ियों से अपनाते रहे हैं। मेवाड़ शैली का सर्वप्रथम उजला रूप 1540 में विल्हण कृत चौरपंचाशिका ग्रन्थ के लघुचित्रों में देखने को मिलाता है। इसी क्रम में अहाढ़ में 1592 में ढोला मारू ग्रन्थ राष्ट्रीय संग्रहालय में सुरक्षित है। मेवाड़ की चित्रकला का अगला उदाहारण चावड़ में निसारदी द्वारा चित्रित रागमाला जो 1605 की है, इसी शैली में बनी एक अन्य रागमाला चित्र रागिनी गूजरी 1609 बड़ौदा संग्राहलय में सुरक्षित है।

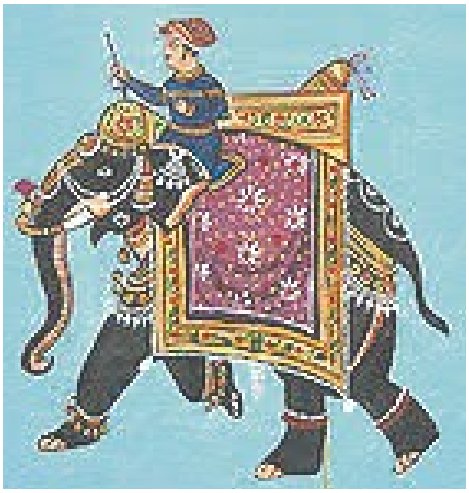

ऐसे ही मेवाड़ के गिलुण्डन में एक सचित्र ग्रन्थ प्राप्त हुआ है। इसी तरह और भी राग–रागिनी चित्रणों में नायिका भेद, रसिक प्रिया, इत्यादि नामों से लघु चित्रण की जानकारी प्राप्त है। इस लघु चित्रण शैली का सबसे अधिक विकास महाराजा जगत सिंह प्रथम के काल में हुआ। इनके नाम हैं, रागमाला, गीत गोविन्दम्, रसिक प्रिया, सूरसागर, दूसरी रसिक प्रिया, कुमार सम्भव, रसमंजरी, कविप्रिया, तीसरी रसिक प्रिया, आर्षरामायण, **(अ)** बालकाण्ड **(ब)** अयोध्या काण्ड **(स)** अरण्य काण्ड **(द)** युद्ध **(फ)** किष्किन्धा काण्ड इत्यादि के बाद जगत सिंह के पुत्र राजसिंह ने भी लघु चित्रण शैली की परम्परा को बनाये रखते हुए शूकरक्षैत्र महत्म, भ्रमरगीत, महाभारत, गीत गोविन्द इस तरह मेवाड़ के राजाओं ने अनेक भक्तिकालीन व रीतिकालीन काव्य ग्रन्थों से प्रेरित विषयों पर स्वतंत्र ग्रन्थ चित्रों का चित्रण किया। महाराजा संग्राम सिंह भी इस कला के पारखी रहे हैं।

विभागाध्यक्ष (चित्रकला विभाग), अटल बिहारी हिन्दी विश्वविद्यालय, भोपाल (मध्यप्रदेश)

उनके शासन काल में एक चित्रकार जगन्नाथ अपनी प्रसिद्धी पर था और वह कवि भी था। अतः उसके द्वारा बिहारी सतसई व सुन्दर श्रृंगार जैसे ग्रन्थ लिखे व चित्रित किए गए। इसी समय में मुगल प्रभाव भी चित्रण पर हावी था, जिसके फलस्वगरूप जगत सिंह द्वितीय के समय मुल्ला–दो–प्याजा, पृथ्वीराज रासो, मालती माधव, गजेन्द्र मोक्ष जैसे ग्रन्थों को चित्रित करवाया।

राग–रागिनी चित्रण करने के लिए चित्रकारों ने प्रमुख 6 रागों व पाँच रागिनियों को मूल रूप से सृजित किया है, जो इस प्रकार हैं : राग माकंस, राग दीपक, राग श्री, रागमेघ, इसके साथ ही चित्रकारों ने बड़े ही संयम और लगन के साथ प्रतीकों का आश्रय लेकर श्रृंगार रस को दृश्यमान किया है।

श्रृंगार के दो भेद हैं, (1) संयोग श्रृंगार (2) वियोग श्रृंगार। रागमाल में सर्वाधिक चित्रण वियोग श्रृंगार भाव पर हुआ है। इस भाव के अन्दर प्रणय, संदेश की प्रतीक्षा, पति के सुरक्षित लौटने की कामना करती हुई, शिव की आराधाना में लीन, यद्यपि रागमाला चित्रों में वियोग श्रृंगार की अभिव्यक्ति अधिक रूचिकर लगा, वहीं संयोग श्रृंगार के अंकन को भी निश्चल रूप से किया है। जैसे नृत्य कर के पति को रिझाती, प्रणय पर्व की तैयारी पुनर्मिलन, उषा काल की तैयारी इत्यादि संयोग श्रृंगार में परिलक्षित होता है।

चित्रकारों ने इन राग–रागिनियों के विविध भावों को रमणीय रंग संयोजन से हृदयग्राही दृश्य प्रस्तुत किए हैं। भारतीय लघुचित्रों में राग–रागनी की कल्पना नायक एवं नायिका के रूप में की गयी है। इस समय वैष्णव धर्म अपने पूरे यौवन पर था। श्री कृष्ण तो जितना जनमानस के प्रिय रहे हैं, उतने ही श्रद्धेय शासकों के लिए भी रहे हैं। अतः इस समय काव्य संगीत व चित्रकला में नायक के रूप में श्री कृष्ण व नायिका के रूप में राधा सर्वाधिक चित्रित हुई, जो की श्रृंगार भाव और सौन्दर्य रस की पूर्ण रूपेण व्याख्या है। काव्य की आत्मा है और इन राग–रागिनियों के चित्रण में इन सौन्दर्य रस से भरे काव्यों को ही चित्रकारों ने श्रृंगार रूप में चित्रित किया है।

भारतीय चित्रकला में 'भाव' को विशिष्ट महत्व दिया है और राग–रागिनियों के कलाकारों ने भावों के प्रदर्शन में रेखाओं और रंगों का प्रतीक रूप में आश्रय लेकर विषय को भावग्रही बनाया है। चित्रकारों ने भावों को मूर्त रूप देने के लिए प्रकृति के विविध रूपाकारों को संयोजित कर विषय वस्तु को स्पष्ट करने में रंगों और रेखाओं द्वारा कोमलतम भावनाओं का प्रयोग किया है।

भारतीय लघु चित्र शैली में चित्रकारों ने राग–रागिनियों के प्रदर्शन में परम्परागत शास्त्रीय एवं लोक नियमों के आधार पर विविध आश्रयों का लेकर बड़ी ही एकाग्रता से चित्रण किया है।

इसलिए कहा गया है कि, मेवाड़ शैली राजस्थानी चित्रकला की अमर धरोहर है। राजस्थान के जन–जीवन तथा सामंती जीवन का जीता–जागता स्वरूप मेवाड़ शैली में परिलक्षित होता है।

संदर्भ :

(1) अग्रवाल, गिरीराज किशोर : कला और कलम।

(2) *अग्रवाल, गिरीराज किशोर : रूपकर, अलीगढ़, द्वितीय संस्करण।*

(3) *अग्रवाल, आर.ए. : कला विलास।*

(4) *इन्टरनेट व विभिन्न समाचार पत्र व पत्रिकाएँ।*

❁❁